भगवत् कृपा

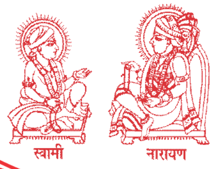

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष–3, अंक–4	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा–20.00
गुरुवार, 12 अप्रे. ' 79	मानद सहसम्पादक: डॉ. महेन्द्र दवे–श्री विमल दवे	प्रति अंक : 2.00

कृपावतार स्वामिश्री सहजानंदजी

श्री स्वामिनारायण के धर्मताल और प्रजा के हृदयताल–

श्री सहजानंदस्वामी की एक विशेषता यह थी कि उन्होंने स्वामिनारायण धर्म के द्वार सब के लिये खुले कर दियें। अभी तक 'हिन्दु धर्म' उच्च वर्णों के लिये था और जिन को सामान्यतः हलकी जातियां कही जाती है उनके लिये धर्मद्वार में प्रवेश निषिद्ध था। परधर्मी मानी जाने वाली पारसी और मुसलमान जाति को तो प्रवेश ही नहीं था। हरिजनों को छूने का प्रश्न नहीं तो फिर धर्म में प्रवेश कैसे हो सकें? किन्तु स्वामी सहजानंदस्वामी की सहज बुद्धि ने कह दिया कि परमात्मा का भजन तो सब कर सकते हैं। उन्होंने ऊँच-नीच जात-पात, प्रांत प्रदेश-देश, स्वधर्म-परधर्म आदि संकीर्णता की सब दीवारें तोड़ डाली और सारी प्रजा को आत्मसात् किया। परिणाम स्वरूप स्वामिरायाण धर्म प्रजा की जड तक पहुँच गया और सहजानंदस्वामी के पद ताल के साथ सारी प्रजा का हृदय ताल देने लगा-समग्र जीवन ताल देने लगा। इतना ही नहीं, महाराज ने इन सब लोगों का जीवन-नैतिक, सामाजिक और धार्मिक जीवन अत्यन्त उच्च कक्षा में रख दिया। समग्र प्रजा को इस प्रकार एक कर के, उच्चता का घमंड नष्ट करके हीनता की भावना नष्ट करके एक रस बना कर ऊंचा उठाना यह सामान्य बात नहीं है।। विशेषकर जब प्रजा स्वयं अज्ञान, अंधश्रद्धायुक्त और आर्थिक दृष्टि से कष्ट में हो। किन्तु श्रीजी ने यह कर के दिखाया और इतिहास इसकी गवाही दे रहा है। स्वामी रामानंद ने अहिंदुओं को अपनाया था, किन्तु सहजानंदस्वामी ने इनको अपनाया तो है ही, साथ-साथ इनको साधु बना कर, उच्च प्रतिष्ठा दिला कर पूज्य भी बनाया है। एक ही उदाहरण इसके लिये पर्याप्त होगा। असाधारण साधु और गुजराती साहित्य में जिसका नाम गौरवपूर्ण है और जिन्होंने सभी भाव से सहजानंद की स्तुति की है वह महाकवि प्रेमानंद 'प्रेमसखी' पूर्वाश्रम में मुसलमान थे !

प्राणघातक कुरिवाजों का नाश–

समग्र प्रजा को एक स्तर में लाने में महाराज को कम कठिनाइयां नहीं आई थीं। प्राणघातक कुरिवाजों को नष्ट करने के लिये उनको अहिंसक किन्तु जबरदस्त लड़ाई करनी पड़ी थी।

उस जमाने की बात है। काठीओं और राजपूतों में एक दुष्टाचार प्रचलित था। इसको कहते थे 'दूध पीती करना'। घर में लड़की का जब जन्म होता था तब एक पात्र में अधिक मात्रा में दूध भरा जाता थी, इसके बाद इसमें नवजात शिशु को उलटा लटका कर डूबोया जाता था। इस प्रकार उनका प्राण रुंधन कर मारा जाता था। महाराज जैसे करुणापूर्ण हृदयवाले को यह कैसे सहन होता? उन्होंने शीघ्र ही अपने आश्रित काठी और राजपूत हरिभक्तों को आज्ञा की और यह बालहत्या की दुष्ट प्रथा बन्द करवा दी। परिणाम स्वरूप सारे प्रदेश के काठी और राजपूत समाज में भयंकर हलचल मच गई। और उन्होंने इस परंपरा प्राप्त रिवाज को बन्द नहीं करवाने के लिये सहजानंदस्वामी को समझाने के लिये दृढ़ निश्चय किया।

उस समय श्रीजी महाराज 'बधिया' नामक ग्राम में बिराजमान थे। वहां वे सब काठी, राजपूत दर्शन का निमित्त कर के पहुंच गये। अंतर्यामी महाराज इनकी परेशानी भी जानते थे। अतः उन्होंने इन सबका प्रेम से आदर-सत्कार किया और बाद में उपदेश दिया-

'लड़की (नवजात शिशु) के 'दूध पीती' करने से तीन प्रकार की हत्या का पाप लगता है-

(1) एक तो अपने ही निर्दोष परिवारजन की हत्या का पाप

(2) दूसरा बाल हत्या का पाप।

(3) तीसरा निःसहाय स्त्री हत्या का पाप। अतः हमारी आज्ञा है कि यह पाप किसी को भी नहीं करना है।'

तब काठी और राजपूतों ने कहा, 'महाराज क्या करें? लड़की की शादी के पीछे अत्यधिक खर्च होता है। इतना खर्च करने की हमारी शक्ति नहीं है। अतः हम लड़की को 'दूध पीती' करते हैं।' महाराज ने शीघ्र ही प्रत्युत्तर दिया कि शादी के लिये जितने रुपये चाहिए यह हम सारे सत्संगियों के पास से इकट्ठा करके आप को देंगे, किन्तु किसी भी कारण को सामने रखकर यह हत्या तो करनी ही नहीं है।

महाराज के इन शब्दों को सुनकर उन लोगों के पास वास्तव में कोई प्रत्युत्तर नहीं था। तब भी एक राजपूत ने कहाः 'हमारी बिरादरी में लड़के दुर्व्यसनी, व्यभिचारी और दुराचारी होते हैं। अतः कोई रुपये दें तब भी हम अपनी कन्याओं की शादी जिस किसी के साथ करके अपनी इज्जत नहीं कटवाएंगे।'

यह सुनकर महाराज ने आज्ञा के स्वर में पलंग पर हाथ ठोकर भविष्यवाणी की।

'यह सब चिन्ता भगवान पर छोड़ दो। भगवान यह सब देख लेगे। यदि हमारी आज्ञा का आप उल्लंघन करेंगे तो आपको लड़कियों की शादी जंगली लोगों के साथ करनी पड़ेगी। और देखिये अब ऐसा शासन (अंग्रेजो का) आ रहा है जो कानून और सत्ता से तुम्हारा लुटेरे का धन्धा भी छुडवायेंगे और तुम्हारे सारे कुरिवाज भी बन्द करवायेंगे। परवश बन कर के सब कुछ छोड़ना पड़ेगा और हाथ में जप माला लेना पड़ेगी और उस समय तुम्हारी एक भी नहीं चलेगी।..... अतः हमारी आज्ञा का पालन कीजिए और प्रसन्नता प्राप्त कीजिए। आप भवितव्यता से रक्षण प्राप्त कर लीजिए। भगवान तुम्हारी सहायता करेंगे।'

काठी और राजपूतों की अन्तर दृष्टि खुल गई। उनको महाराज की बात में श्रद्धा हो गई और वचन दिया कि हम आपकी आज्ञा का पालन निश्चित करेंगे। महाराज की भविष्यवाणी सच हुई ! उस समय अंग्रेज शासन सूरत से उत्तर में पूरे गुजरात में फैल चुका था। सौराष्ट्र की और अंग्रेजी सत्ता आगे बढ रही थी। अल्प समय में शासन ने सब कुरिवाज समाप्त कर दिये।

-क्रमशः

अस्खलित मंगलकृपाधारा........

दिनांक 6 मई, 1979 और रविवार के दिन प्रातः दिल्ली मंडल प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का जन्म महोत्सव मनाने जा रहा है। वास्तव में स्वामिश्री जैसे सन्त का जन्म महोत्सव हम अपने आपको धन्य बनाने के लिये करते हैं। सकल काल में निवास करने वाली सनातन विभूति को स्वयं ऐसी किसी भी प्रकार की अपेक्षा नहीं है। यह अपेक्षा हमें हैं क्योंकि उस दिन विशेष चिंतन, मनन, निदिध्यासन करने से हम ऐसे आत्यंतिक मोक्षदाता पुरुष के साथ निर्विकल्प भाव से अपने आपको जोड़कर अपने जीवन की त्रुटियाँ, अपूर्णता और झूठी कल्पना आदि का सामूलाग्र प्रलय करके कृतकृत्यता और कृतार्थता का अनुभव करने के लिये कृतसंकल्प होते हैं। और मन ही मन इतनी ही तैयारी करने से स्वामिश्री अन्य सर्व जिम्मेदारी अपने आप उठा कर हमारे जीवन को धन्य बना देंगे यह सुनिश्चित तथ्य है।

हमारे जीवन में इतनी बड़ी उथल-पुथल कर सकने वाली यह विभूति कौन है? क्या वह भगवान है। नहीं। भगवान तो एक ही है। क्षर और अक्षर से भी पर परुरुषोत्तम एक ही है-सहजानंदस्वामी महाराज। वह एक ही है-अनन्य और अद्वितीय ! ऐसा पूर्व में कोई था नहीं, है नहीं और होने वाला भी नहीं है। किन्तु अवतारों के अवतार भगवान स्वामिनारायण ने अपनी इस जीवनलीला सम्पूर्ण कर के यहां से विदाई नहीं ली है, किन्तु मुमुक्षुओं के हितार्थ एक ऐसी सन्त परम्परा छोड़ रखी है, जिन में महाराज अखण्ड निवास कर रहे हैं। इस परम्परा के आदि पुरुष थे गुणातीतानंदस्वामीजी। अतः हम इसको कहते है-गुणातीत परम्परा। यह है, आज भी है और सृष्टि के अन्त तक रहने वाली है इस में तनिक भी शंका नहीं है, न ही होनी चाहिए।

हम भगवान स्वामिनारायण को नित्य प्रगट पुरुषोत्तम कहते हैं। क्यों? क्योंकि यह गुणातीत पुरुषों में नित्य निवास कर रहे है। अतः यदि भगवान को देखना हो, यदि भगवान के सान्निध्य प्राप्त करना हो, यदि भगवान की साथ सायुज्य होना हो तो ऐसे दिव्य पुरुषों का समागम करना चाहिए, उनकी विभूति को पहचानना चाहिए। और यदि इस प्रवृत्ति का प्रारंभ अभी तक नहीं हुआ हो तो इस जन्म महोत्सव के दिन से हो, ऐसा दृढ़ निर्णय हम करें।

यह एक कितनी बड़ी आश्चर्यजनक घटना है कि आज-इस समय अभी हमारे जीवनकाल में भगवान जिन में निवास करते हैं, जो हमेंभगवान के साथ हाथ से हाथ मिला दें-दिल से दिल मिला दें और हमारी सारी आधि, व्याधि, उपाधि एक क्षण-में चुटकी में नष्ट कर दें ऐसी विभूति विद्यमान हैः इतना ही नहीं सक्रिय है ! यदि 'भगवान भगवान' हम रटते रहें और प्रत्यक्ष मूर्ति में जहां भगवान है इस को पहचाने नहीं, पहचानने की कोशिश नहीं करें, पहचानने के बाद निष्ठा न रखे तो हम जहां है वहां से आगे कैसे बढ़ेगे? प.पू. काकाजी का तो स्पष्ट आह्वान (Challange) है कि दाल-रोटी भी हमारी। आइये, साहस कीजिए, हमारा सान्निध्य कीजिए, हमारा क्रियाकलाप देखिए। इसमें दिव्यता लगें तो निष्ठा कीजिए और कुछ नहीं करना है, इसके बाद काका-पप्पा-स्वामिजी आप के जीवन का अपने आप कितना दिव्य बनाते हैं यह ही देख लीजिए। आज हम कहां है? विश्व की मानव जाति आज किस हालत में है? आज कोई नहीं कह सकता है कि मैं सुखी हूं? नितान्त सुख किसी को नहीं है। चारपाई का एक कोना तो नष्ट होगा ही। स्त्री, धन, मान के प्रति अंधी दौड़ चालू है। व्यक्ति इन सबको सुख के साधन मानता है, किन्तु वास्तव में ये सुख

के साधन नहीं है। मानवजाति के लिये सारे संसार में जीवन असह्य हो गया है। सब राजकीय, आर्थिक, सामाजिक, नैतिक तथा मानसिक तनाव में है।

इनमें से मुक्त होना है तो अब केवल एक ही आश्रय है और वह सन्त का है। क्योंकि सन्त ही निश्चिंतता और निर्भयता दे सकता है और यह ही असली वास्तविक सुख है।

सन्त या साधु का परिचय सहजानंदस्वामी ने इस प्रकार दिया है।

''प्रारब्ध कर्म का जो परिवर्तन करता है, वह साधु है।'' हमारे दुःख के दो मूलभूत कारण हैः (1) लाखों क्या करोड़ों जन्मों का भयंकर प्रारब्ध, और (2) हठीपन, मान, ईर्ष्या और काम, क्रोध, लोभ आदि से युक्त हमारी प्रकृतियां।

इन के कारण हम इकावन तत्त्वों में पंचभूत के विकारों में-इन्द्रियां और अंतःकरण के भाव में स्थित हैं। बलवान सिंह (आत्मा) सुदृढ़ पिन्जरे में है। इसमें ही रह कर अपनी आत्मशक्ति को रुद्ध करना है या बाहर निकलना है? व्यक्ति या समष्टि को इस में से बाहर निकलना हो तो क्या स्वप्रयत्न से निकल सकेंगे? नहीं। वह तो सन्त निकाल सकता है क्योंकि सन्त परमात्मा के अखंड धारक है, अखंड ब्रह्मदशा में है और परब्रह्म इनमें निवास कर रहे है। निष्कामी ही हमें निष्काम कर सकते हैं, निष्क्रोधी ही हमें निष्क्रोधी कर सकते हैं। ऐसे सन्त में निष्ठा हो जाय, और वह प्रसन्न हो जायेगा तो हमारे प्रारब्ध और प्रकृति के विष को क्षण मात्र में उतार देगा और हमें यह सूझ होने लगेगी कि हम परमात्मा के पुत्र है, अमृत के पुत्र है। मृत के नहीं। सन्त को शुभाशिषों से हमें धर्म, ज्ञान, बैराग्य, भक्ति जैसी दिव्य श्री सहज प्राप्त होगी। परिणाम स्वरूप जन्म-मृत्यु के विषचक्र को हम काट सकेंगे। परम अमृत के परमात्मा के पुत्र की मृत्यु नहीं होती और जन्म लेने का कारण भी नष्ट हो जाता है।

किन्तु यह सनातन सुख, सनातन आनन्द तब प्राप्त हो सकता है जब असली भगवत्स्वरूप सन्त की पहचान हो जाय। प.पू. हरिप्रसादजी ऐसे सन्त है क्योंकि वह गुरुहरि योगीजी महाराज की परम्परा में है। श्रीजी महाराज जिनके द्वारा जगत् कल्याण करवाना चाहते है, योगीजी महाराज ऐसे सन्त थे। इन सन्तों के लक्षण है :

(1) स्त्री, धन, मान-कामिनी, कंचन और कीर्ति का संकल्प भी इन को नहीं होता है। ऐसी अपेक्षा, भाव या रस इनको नहीं होते हैं।

(2) इन सन्तों को नित्य-अखण्ड परमात्मा में ही रस है।

(3) अतः इन का सारा क्रिया-कलाप संसारजन्य वृत्तिओं से नहीं किन्तु परमात्मा से उठता है।

महाराज की कृपा से और महाराज के संकल्प से पांचवीं पीढ़ी में योगीजी महाराज आये। इन्होंने हमारे युग में जो कार्य किया वह सुविदित है। चाहते तो पांच हजार युरोपियनों को साधु-दीक्षा दे देतें और इनको समर्थ बना देते किन्तु इन्होंने चाहा-सच्ची साधुता, सच्ची प्रभुता, सच्चे गुण, सच्ची सरलता स्थापित करना और एक ब्रह्म नियंत्रित समाज का निर्माण करना। अपना वह युग कार्य उन्होंने करके दिखाया और हमारे लिए चार दिव्य विभूतिओं की विरासत वे छोड़ गये। इस में एक है प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी। वह कैसी विरल दिव्य विभूति है यह तथ्य स्वयं योगीजी महाराज ने सबके सामने-प्रकाश में घोषित किया है। इनके शब्द में ''हरिप्रसादस्वामी अर्थात्-जिनको माया पराभव न कर सके ऐसा ईंजन।'' आज स्वामी, योगीजी महाराज की इस उक्ति को यथार्थ चरितार्थ कर रहे हैं। अखण्ड सद्भावना, असाधारण प्रीति, भगवदीय सन्तों और हरिभक्तों

के प्रति समतापूर्वक सद्भाव इनकी सहज सिद्धि है और इनके आध्यात्मिक फल स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं। सत्संग के वह गोपाल है। अतः सब मुमुक्षुओं को अत्यंत विषम परिस्थिति में भी अत्यंत धैर्य और शान्ति से कैसे सुमधुर, भगवदाभिमुखजीवन जिया जा सकता है यह करना सिखा रहे है। धन, मान, सत्ता, काल, कर्म, माया, शक्ति से भी जो नहीं खुल सकता है ऐसे परमानंदमय दिव्य दरवाजे हजारों मुमुक्षुओं के जीवन में स्वामी खोल रहे है। स्वामी के सान्निध्य में हमारी आंख को दिव्य अस्तित्व की झांकी होती है, हमारे मन को परम निश्चिंतता की प्राप्ति होती है आत्मा सब उपाधियों से रहित होकर चिदाकाश में विहार करने लगता है। प.पू. हरिप्रसादस्वामी नित्यसमाधि में है, नित्य निवृत्ति में है साथ-साथ सतत प्रवृत्तिशील जीवन गुजार रहे हैं। इनके अस्तित्व का एक छोर अक्षरधाम के साथ जुड़ा हुआ है तो दूसरा छोर जगत् कल्याण के लिये जगत् के साथ। स्वामिजी के पास पांच मिनट बैठने से ही इस बात की शीघ्र प्रतीति हो जाती है। अखंड ब्रह्मात्मभाव में रहते हुए भी स्वामी क्षण क्षण क्रियाशील है।.....वे नये संत बनाते हैं, अविरत विचरण कर रहे हैं, अनेकों को चैतन्यस्वरूप में दर्शन दे रहे हैं.....। पूरे विस्तार से इनके कार्य-कलापों का यहां वर्णन करना संभव नहीं है। कहां कहां घूमते है ! एक जबरदस्त शक्ति, एक वायुमंडल, एक विद्युत भ्रमण कर रही है। गुजरात बहार भी कभी बेंगलोर या मद्रास में, कभी भोपाल और इटारसी में तो कभी कलकत्त और दिल्ली में भ्रमण करते हुए स्वामी मुमुक्षुओं को दिव्य-दृष्टि प्रदान करते हैं और इसके द्वारा मुमुक्षुगण अपने आप के गुरु बन कर अपने जीवन में महाराज को ही कार्य करते हुए स्पष्ट देखते हैं। स्वामिजी को प.पू. काका के प्रति असाधारण पूज्यभाव है, इतना ही नहीं काकाजी की सच्ची पिछान भी है। पू. काकाजी केवल धाम, धामी और मुक्तों को ही सत्य मानकर जीवन जीने वाले, स्वरूपानुभूति वाले सच्चे भगवत्स्वरूप सन्त हैं ऐसी दृढ़ प्रतीति स्वामी को प्रारम्भ से है। अतः प.पू. योगीजी महाराज के वचन से उनकी अन्तःकरण की रुचि को जानकर हरिप्रसादस्वामी काकाजी द्वारा प्रारंभित प्रवृत्तिओं में जुड़ गये, इतना ही नहीं इनका खुल्ला पक्ष रखा। परिणाम स्वरुप प.पू. हरिप्रसादस्वामी द्वारा स्वामीबापा स्वयं समग्र सत्संग का नेतृत्व कर रहे हैं।

आजकल का युग बुद्धिमानी का युग है। सच्चे श्रेयार्थी साधकों को चमत्कार में रस नहीं है। प.पू. हरिप्रसादस्वामी की वृत्ति-प्रवृत्ति में ऐसी लौकिक-अलौकिक दृष्टि है ही नहीं। ऐसी अपेक्षा रख कर इनके पास जाना भी नहीं चाहिए। यदि परमानंदमय जीवन जो चमत्कारों का चमत्कार है, यदि विकृत आत्मा मिट कर ब्रह्मरुप बनना चमत्कार है, यदि ब्रह्मरुप बनकर परब्रह्म को पाने का चाह है तो निष्ठापूर्वक आईए, यहां प.पू. हरिप्रसाददस्वामिजी है। ब्रह्मस्वरुप गुरुहरि योगीजी की आंतर-बाह्य सेवा कर के इन्होंने गुरुकृपा प्राप्त की है। स्वयं हरिस्वरूप बन गये हैं और अपनी आंतरिक महान चेतना प्रकटित करके हरि का प्रसाद बांट कर स्वनाम को तो धन्य बनाते है, किन्तु हम को भी धन्य बना रहे हैं।

ऐसी पुनित आध्यात्मिक गंगा के प्रवाह में गोता मारना हो तो आईए 6 मई 1979 के दिन प्रातः दिल्ली केन्द्र में और धन्य कीजिए अपने जीवन को; क्योंकि जैसा ही प्रारम्भ में कहा यह ही है प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के जन्मदिन महोत्सव मनाने का मूल हेतु।

The incredible dynamic titan

There are rare occassion when super human divine personalities like Shr Rama, Shri Krishna,Jesus, Shri Mahavir, Buddha and such others manifest on this earth, particularly in India, in human frame as an avatar. By their lives, action and movements they diffuse such light, such power that the humanity is always getting relief from misfortunes and unrighteousness. Particularly some good souls who are constantly suffering from wicked persons are protected and redeemed by them. This is the avatar karya of such dynamic titanic divine personalities.

Right form animal age to human being such masters or avatars have added on step for happiness and betterment throughout the world, but there is always such misfortune that because of their human garb men and women can't recogonise them as 'avatar' during their own lifetime. Mostly all such avatars have suffered heavily and initially they were rebuked and insulted by the people on whom they bestowed love and compassion. Yet by their grace and blessing, sufference and tallerence they redeemed the masses and gave their lives also, Such was the work of Shri Rama Jesus, Buddha and other avatars.

Our Lord Swaminarayan, in this case, said that in such spritual matters of transformation and development Lord Krishna worked out in all spheres of life on multidimensional basis. As an ordinary human-being he mixed up with illiterate devotees and gopijans. With Pandavas and Kaurvas he worked out very skillully. His Gita is the real essence of spiritualism. It effects all spheres of life from birth to death, from childhood to old-age. Even one shloka of Gita will reveal the inner truth and enlighten any human-being. Even then such a dynamic divine personality was not properly recogonised nor respected by His intimate devotees and even by those on whom he bestowed His special favors. However, it was a distinguishing characterstic of Lord Krishna. Therefore our Lord Swaminarayan recogonises Him as supreme avatar. Then what to talk of Lord Swaminarayan whom thousand of persons accepted as a living supereme God and worshipped Him with full devotion in His own life. There is no parallel in the spiitual history of honouring and respecting any avatar in His life time by honouring of people with a mass movement and at the sametime dedcicating and surrendering fully at the lotus feet of the Master. Relinquishing all the possessions and family-traditions they fully recogonised Sahajanand Swami as their Supreme Master at the age of twentyone and they chanted His name. All of them had darshans -visions and fulfillment in their lives. There was a band of 500 decicated saints who worked out in village to village with downtrodden masses and eraicated the illusions and freed them from bad vices like drinking, adultry, meat-eating, killing, stealing etc.

The same spiritual hierarchy is maintained. Mul-axar-murti Gunatitanand

Swami was such an immediate spiritual successor who carried out the same holy fellowship. The same spiritual hieranchy is continued in the divine form of supremely realised Master like Bhagatji Maharaj, Jaga Swami, Krishnajee Ada, Shastriji Maharaj and Yogiji Maharaj and now with their blessings in the form of Pujya Kakajee, Pujya Pappajee, Pujya Hariprasad Swamijee, Pujya Mahant Swamijee and Pyjya Pramukh Swamijee. It is upto any true aspirant of the truth seeker to come in contact with such five divine personalities any try to experience the truth by themselves. After unique spiritual experience, according to one's own inherent law of nature, one may then surrender fully, totally and completely to such divine Master or Sadguru or supremely realised Satpurusha to complete the spiritual Sadhana of self and supreme realisation in this very life. The advent of Lord Swaminarayan on the spiritual firmament of our conuntry thus seems to be unique in that through His chain of spiritual heirs it was His will to demonstrate to the globe at large the truth behind Lord Krishans' assurance in Gita Shloka-"Abondoning on all duties; grieve not." The all merciful character of Lord stands self revealed by His maintaing a chain of spiritual heirarchy amidst us.

One of such supreme divine Master whom we can call the incredible dynamic divine titan is a Pragat Brahmaswaroop Hariprasad swamijee. He is a sweet and charming personality, Bliss beams out from his face. His conversation is simple; his instructions direct. He answers all questions freely without any hesitation. The influence that he exerts on visitors is subtle, but enormous. It becomes imposible to be away from him as he is actually like a lodedstone attracting all. His doors are open to everyone without any distinction of caste, creed, community, rich or poor, high or low, good or bad. If you study his life, his work as Yogiji Maharaj's secretary, his other qualities and movements with all Satsangees at each level with indomitable faith in the Master and due respect towaras Pujya Kakajee and Pujya Pappajee marks him as the supreme distinguished divine entity whom we can call 'vadvanal Satpurush,' He is a glorious exampel of a divine personality who took birth in Gujarat as an ordinary man, grew in the common state of a man, lead the life of a householder, who with intrepid courage of the highest order, on a signle word of Gurudeo Yogijee Majaraj broke off his worldly shackles. In his race to the ultimate destiny of God realisation he left nothing stand in the way-not evern the piteous pleas of his wife or the lingering looks of his only child. Histroy speaks of Gautam Buddha Gauranga and Vivekanand who had displayed the same measure of signle mindedness in the quest of God. Such was Swamijee's perseverence too which ended only when the meandering river had finally lost itself in the limtless ocean and continued to flow into it.

Pujya Kakajee and Pujya Pappajee have openly recogonised and advocating these facts to the entire Gunatit Samaj. Pujya Swamijee has also shown such affinity and love intimacy towords these two divine Masters. This is our good fortune specially bestowed by Yogijee

Maharaj on us by creating little demarcation-diversion for the new creative working in Akshar-Purushottam tradition. A day will come when Yogijee Maharaj's divine vision of spreading the message of Lord Swaminarayan in its true essence throughout the world for real happiness and bliss of all human beings will be fulfilled by these living divine Masters. Most probably this will be publicly recogonised at the time of twicenternary celebration of Lord Swaminarayan in 1981.

Let us come in contact with such divine Masters, experience the real truth and serve them with devotion.

On this auspicious 6th May-the brithday of such a realised saint-Pragat Brahmaswaroop Hariprasad Swamijee one can offer the prayers and also serve the Master with whatever one can do lovingly and gracefully, thus attaining redemption and enlightnment in this very life. May Lord Swaminarayan, Shastrijee Maharaj and Yogijee Maharaj bless us all for this divine vision and suhridbhav in the entire Gunatit samaj.

ध्यानाकर्षण

'योगी डिवाईन सोसायटी' से संबद्ध सब आत्मीय जनों और इस पत्रिका के सब ग्राहकों को सूचनार्थ निवेदन है की अब तक हमारा टेलीफोन नं. था 518838। अब हो गया है 718838। इस परिवर्तन को सब नोट कर ले क्योंकि अब से योगी डिवाईन सोसायटी के साथ दूरभाष व्यवहार 718838 नंबर पर होगा।

व्रतोत्सवसूची

1.	दि. 23.4.79	सोमवार	एकादशी, व्रत
2.	दि. 5.5.79	शनिवार	नवमी,श्री स्वामिनारायण जयंती
3.	दि. 6.5.79	रविवार	प.पू.प्र.ब्र.स्व. हरिप्रसादस्वामिजी का प्राकट्यदिन
4.	दि. 8.5.79	मंगलवार	एकादशी, व्रत
5.	दि. 11.5.79	शुक्रवार	श्री नृसिंहजयंती

साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदास जी द्वारा योगी डिवाईन सोसाईटी,
ए-13, अशोक विहार-III, दिल्ली-110052 फोनः 518838
मुद्रण स्थानः ठक्कर प्रिंटिंग प्रेस, 2588, बस्ती पंजाबियान, सब्जी मण्डी, दिल्ली-110077